International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

कौटिल्य का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में योगदान

रोहित सिंह

शोध छात्र,राजनीति विज्ञान विभाग,दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,गोरखपुर (उ0प्र0)

शोध संक्षेप:
"प्रजा सुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियम् हितम्।।"
कौटिल्य के अंतरराष्ट्रीय राजनीति का विश्लेषण **यथार्थवादी** है, जिसका मूल अभिप्राय है कि प्रत्येक राज्य ज्यादा से ज्यादा शक्ति अर्जित करना चाहता है जिससे उसकी सुरक्षा बेहतर बनी रहे। कौटिल्य के चिंतन में राज्य ही मूल इकाईयां हैं और राज्य के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए कोई अंतरराष्ट्रीय संगठन नहीं है। इसी विचार को वर्तमान यथार्थवादी विचारक **केनेथ वॉल्ट्ज** ने निर्मित किया है जिनके विचार को **नव यथार्थवादी अथवा संरचनात्मक यथार्थवादी** कहा जाता है,जिसका तात्पर्य है कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति की संरचना अराजकतापूर्ण है। इसलिए राज्यों की सुरक्षा के लिए उन्हें ज्यादा से ज्यादा शक्ति अर्जित करना पड़ता है।
कौटिल्य ने मण्डल सिद्धान्त के तहत विदेश नीति की चर्चा की और बताया कि **पड़ोसी स्वाभाविक शत्रु होता है।** इस तरह कौटिल्य यथार्थवादी विचारक की कोटि में आता है।इसे भारत का मैकियावेली कहा गया। उल्लेखनीय है कि कौटिल्य के चिंतन में राज्य अथवा राजा का महत्व सर्वाधिक है और राजा धर्म से बंधा हुआ नहीं है, लेकिन आम व्यक्तियों के लिए धर्मानुकूल आचरण करना आवश्यक है, इसलिए कौटिल्य का विचार **पंथनिरपेक्ष चिंतन** भी माना जाता है जहाँ धर्म और राजनीति के बीच अलगाव किया गया है।
कौटिल्य ने यह भी विस्तृत रूप में उल्लिखित किया कि एक राजा को दूसरे राजा के साथ किस प्रकार सम्बंध का निर्माण करना चाहिए। इसके अंतर्गत 6 नीतियाँ आती हैं- **संधि, विग्रह, आसन, आश्रय, द्वैधी भाव, यान** । राज्यों के समूह को ही कौटिल्य ने मण्डल के रूप में चित्रित किया। कौटिल्य के बृहद मण्डल में 12 राज्य विद्यमान हैं। मण्डल के केंद्र में विजीगीषु(विजय की इच्छा रखने वाला राज्य)राज्य होता है तथा इसके पड़ोस के राज्य को अरि(शत्रु)तथा अरि के बगल में मित्र राज्य होता है। मण्डल में सबसे शक्तिशाली राज्य उदासीन होता है। कौटिल्य के 'मंडल सिद्धांत' में 'विजिगीषु' या केंद्रीय राज्य की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए और विदेशी संबंधों में मित्र और शत्रु राज्यों की विस्तृत चर्चा की है। लेख से यह समझने में मदद मिलेगी कि भारत की विदेश नीति के विकल्पों में शास्त्रीय शास्त्र अभी भी कैसे प्रासंगिक है। निश्चित रूप से कौटिल्य के अर्थशास्त्र ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में निर्णय लेने को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

मुख्य शब्द: यथार्थवादी, अर्थशास्त्र, विदेश नीति, कूटनीति, विजिगीषु, मंडल सिद्धांत, सप्तांग सिद्धांत।

प्रस्तावना

कौटिल्य विश्व-प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक थे जिन्हें शासन कला के सिद्धांत की व्याख्या के लिए जाना जाता है। वे चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के महान यथार्थवादी विचारक और प्रतिभाशाली विद्वान थे। कौटिल्य, जिन्हें चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है, ने "अर्थशास्त्र" की रचना की, जो राजनीतिक विषय पर लिखी गयी पुस्तक है, इसमें चक्रवर्ती राजा एवं राज्य का उल्लेख है।व्यापक कर प्रणाली, गुप्तचर प्रशासन, आर्थिक-सामाजिक विषय पर विस्तार से वर्णन

किया गया है।इसमें कहा गया है कि"**प्रजा के सुख में राजा का सुख है।**"अतः राजा को वह कार्य करना चाहिए जो प्रजा के हित में हो। इस तरह कौटिल्य ने लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की। कौटिल्य का राज्य **सप्तांग सिद्धान्त** कहलाता है तथा राज्य का मूल कार्य है-प्रजा का रंजन या कल्याण।कौटिल्य ने लिखा कि सेना में सभी लोगों को शामिल करना चाहिए। इस तरह कौटिल्य राज्यहित पर बल देता है और शासन कार्य में वर्ण भेद को अस्वीकार करता है।

कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र को उनके शासन कला के सिद्धांतों के लिए दुनिया भर में व्यापक मान्यता मिली। अंतराष्ट्रीय राजनीति में कौटिल्य के योगदान के संदर्भ में, कौटिल्य के काम को न केवल पश्चिमी विद्वानों द्वारा बल्कि कभी-कभी भारतीय बौद्धिक समुदाय द्वारा भी उपेक्षित किया गया । भारत को पहले आध्यात्मिकता की भूमि के रूप में पहचाना जाता था, परन्तु अर्थशास्त्र की खोज ने उन धारणाओं को अप्रासंगिक बना दिया।

कौटिल्य की विदेश नीति, जिसे 'अर्थशास्त्र' में विस्तार से वर्णित किया गया है, आज भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। उनके विदेश नीति के सिद्धांतों में प्रमुख रूप से कूटनीति, शक्ति का संतुलन, और राष्ट्रीय सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया है। कौटिल्य का मानना था कि राष्ट्र को अपनी सुरक्षा और शक्ति बढ़ाने के लिए सभी संभावित कूटनीतिक विकल्पों का प्रयोग करना चाहिए।

प्राचीन भारतीय परंपरा में कौटिल्य द्वारा शासन कला को केंद्रीय महत्व प्रदान किया गया। कौटिल्य के अनुसार राज्य की चतुरंगिणी सेना को शक्तिशाली बनाये रखने के लिए कोष शक्तिशाली होना चाहिए और कोष में वृद्धि तभी सम्भव है जब लोगों का जीवन खुशहाल हो। **राजा का मूल कार्य राज्य की सुरक्षा बनाये रखना है, इसके लिए राजा को साम,दाम,दण्ड, भेद सभी उपायों का प्रयोग करना चाहिए।** मैकियावेली की भांति कौटिल्य ने भी यह माना कि राज्य की सुरक्षा साध्य है जिसके लिए किसी भी साधन का प्रयोग किया जा सकता है;जिसका यह भी अभिप्राय होता है कि राजा के कार्यों पर नैतिकता का बंधन लागू नहीं होगा। इसलिए कौटिल्य का चिंतन नैतिकता से तटस्थ है।

कौटिल्य का *अर्थशास्त्र* न केवल भारतीय राजनीति और समाज के संरचनात्मक पहलुओं पर आधारित है, बल्कि इसमें वैश्विक कूटनीति और विदेश नीति पर भी गहरी दृष्टि प्रदान की गई है। कौटिल्य की विदेश नीति की विशेषताएँ आज भी आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति और रणनीति में प्रासंगिक हैं, क्योंकि उनका दृष्टिकोण समय की सीमाओं को पार करते हुए हर काल और परिस्थिति में उपयोगी साबित होता है।

कौटिल्य की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र की सुरक्षा, समृद्धि और अस्तित्व की रक्षा करना था। उनके विचारों में राष्ट्र की शक्ति और रणनीति की स्थिति का विश्लेषण करते हुए, यह स्पष्ट किया गया है कि कोई भी देश अपने हितों की रक्षा के लिए कूटनीति और शक्ति का सही संतुलन बनाए रखे। इस संतुलन को ध्यान में रखते हुए, कौटिल्य ने कूटनीतिक और सैन्य उपायों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया था। उनके अनुसार, एक शक्तिशाली और समृद्ध राष्ट्र की पहचान इसके मजबूत सैन्य बल, आर्थिक नीतियाँ, और प्रभावी कूटनीतिक रिश्तों से होती है।

कौटिल्य की विदेश नीति में 'द्वंद्व' (सामरिक संघर्ष) के मुकाबले 'समझौता' और 'संधि' की अवधारणा भी प्रमुख थी। उनका मानना था कि युद्ध केवल अंतिम उपाय होना चाहिए और उसे एक रणनीति के तहत लागू करना चाहिए। यही कारण है कि कौटिल्य के विचार आज भी विभिन्न देशों की विदेश नीति में प्रभावी हैं, विशेष रूप से उन देशों में जो अपने सुरक्षा हितों के लिए स्थिर और सक्षम कूटनीतिक संबंध बनाना चाहते हैं।

मण्डल सिद्धांत -

"आपका पड़ोसी आपका स्वाभाविक शत्रु है और पड़ोसी का पड़ोसी आपका मित्र है।"

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत उपर्युक्त सिद्धांत पर आधारित है। अर्थशास्त्र के छठे अधिकरण के दूसरे अध्याय में कौटिल्य ने 'मण्डल सिद्धांत 'का वर्णन किया है। मंडल एक संस्कृत शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है "वृत्त"। कौटिल्य

ने अपने अर्थशास्त्र में सैद्धांतिक राज्य-निर्माण के रूप में मंडल प्रणाली की रचना की। कौटिल्य ने राज्य के विदेशी संबंधों की व्याख्या और विश्लेषण करते हुए मंडल सिद्धांत का प्रस्ताव रखा। उनका मानना है कि अगर कोई राजा दूसरे राज्यों से लड़कर और जीतकर अपने राज्य का विस्तार करना चाहता है, तो उसे अपने शत्रु राज्यों की संख्या के अनुपात में अपने मित्रों की संख्या बढ़ानी चाहिए ताकि वे उसके प्रभाव क्षेत्र में बने रहें। दूसरी ओर, कमज़ोर राज्यों को अपने शक्तिशाली पड़ोसियों से सावधान रहना चाहिए। उन्हें समान दर्जे वाले देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने चाहिए और विस्तारवादी नीतियों को अपनाने वाली महाशक्तियों से खुद को बचाने के लिए ऐसे राज्यों का एक मंडल या घेरा बनाना चाहिए।

कौटिल्य के मंडल सिद्धांत में 12 राज्य शामिल हैं। कौटिल्य ने अपने मण्डल सिद्धान्त में अनेक राज्यों के समूह या मण्डल में विद्यमान राज्यों द्वारा एक-दूसरे के प्रति व्यवहार में लायी जाने वाली नीति का वर्णन किया है। इस सिद्धान्त में मण्डल के केन्द्र में ऐसा राज्य होता है जो पड़ोसी राज्यों को जीतकर अपने में मिलाने के लिए प्रयत्नशील है। कौटिल्य ने ऐसे राजा को **'विजिगीषु राज्य'** (विजय की इच्छा रखने वाला राज्य) कहा है। उसकी मान्यता है कि एक राज्य का पड़ोसी राज्य स्वाभाविक रूप से उसका शत्रु राज्य होता है। विजिगीषु राजा के राज्य की सीमा से लगा हुआ जो राज्य होगा, वह, अरि (शत्रु) राज्य होता है। विजिगीषु के राज्य से अलग किन्तु उसके पड़ोसी राज्य से मिला हुआ राज्य विजिगीषु का मित्र होता है और मित्र राज्य से मिला हुआ राज्य अरि मित्र होता है। कहने का आशय यह है कि अपने निकटतम पड़ोसी राज्य का राजा शत्रु उसके आगे का मित्र और उससे आगे का अरि मित्र, इसी प्रकार से क्रम चलता है। ये पाँच राज्य तो विजिगीषु के सामने वाली या आगे की दिशा में होते हैं।

इसी प्रकार कुछ राज्य उसके पीछे की दशा में होते हैं। विजिगीषु के पीछे पार्ष्णिग्र ाह(पीछे का शत्रु), आक्रान्द (पीछे का मित्र), पार्ष्णिग्र ाहसार (पार्ष्णिग्र ाह का मित्र) और आक्रान्दासार (आक्रान्द का मित्र) चार राज्य होते हैं। पार्ष्णिग्राह पड़ोसी होने के कारण ही विजिगीषु का शत्रु होता है। इन दस प्रकार से राज्यों के अतिरिक्त दो अन्य प्रकार के भी राज्य हैं- मध्यम तथा उदासीन । मध्यम ऐसा राज्य है जिसका प्रदेश विजिगीषु तथा अरि राज्य दोनों की सीमा से लगा हुआ है। मध्यम राज्य दोनों की, चाहे वे परस्पर मित्र हों या शत्रु हों, सहायता करने में समर्थ होता है और आवश्यक होने पर दोनों का अलग अलग मुकाबला कर सकता है। उदासीन राज्य विजिगीषु, अरि तथा मध्यम इन तीनों की सीमाओं से परे होता है। वह बहुत प्रबल होता है, उपर्युक्त तीनों के परस्पर मिले होने की दशा में वह उनकी सहायता कर सकता है, उनके परस्पर न मिले होने की दशा में वह प्रत्येक का मुकाबला कर सकता है। इस प्रकार 12 राज्यों का यह समूह राज्य मण्डल कहलाता है। इसे निम्नलिखित चित्र से भली-भाँति समझा जा सकता है।

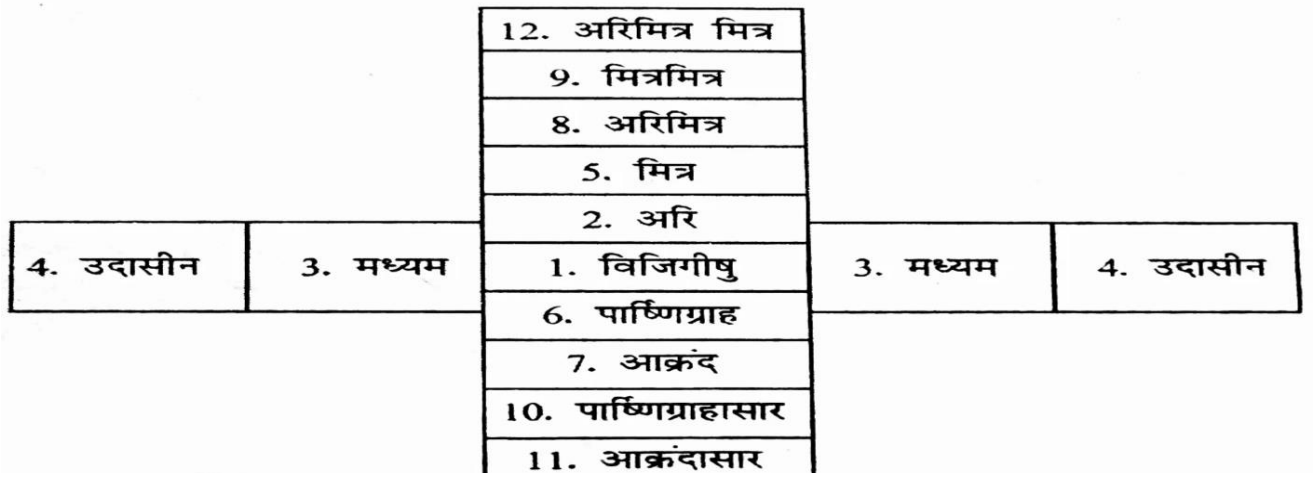

मण्डल सिद्धान्त के आधार पर कौटिल्य ने इस बात का निर्देश दिया है कि एक विशेष राज्य के कौन मित्र हो सकते हैं और कौन शत्रु । राजा की अपनी नीति और योजना इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए ही निर्धारित करनी चाहिए।कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित मण्डल सिद्धान्त आंशिक रूप में ठीक है। उदाहरणार्थ, वर्तमान समय में भारत की सीमाएँ पाकिस्तान और चीन से लगी हुई हैं और बहुत कुछ सीमा तक इसी कारण इन राज्यों के साथ भारत के मतभेद बने हुए हैं तथा भारत के प्रति मतभेदों की इस समानता के कारण पाकिस्तान और चीन परस्पर मित्र हैं। इसी प्रकार भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान तीनों देशों के पारस्परिक सम्बन्धों को भी मण्डल सिद्धान्त के आधार पर समझा जा सकता है। लेकिन वर्तमान समय में जब व्यापार, आर्थिक हित तथा विचाराधारा सम्बन्धी भेद भी संघर्ष के कारण होने लगे हैं, उस समय मात्र सीमाओं के आधार पर राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों की व्याख्या नहीं की जा सकती है।

मण्डल सिद्धान्त के सम्बन्ध में डॉ० अल्टेकर का विचार है कि "प्राचीन विचारक यह जानते थे कि युद्धों को पूर्ण रूप से समाप्त नहीं किया जा सकता है, अतः उन्होंने इसके खतरों को कम करने के लिए एक ऐसे सिद्धान्त का समर्थन किया जिसके अनुसार देश में विद्यमान अनेक छोटे-बड़े राज्यों में शक्ति का विवेकपूर्ण सन्तुलन बना रह सके और युद्ध न हो।"

कौटिल्य की षाड्गुण्य नीति-

पड़ोसी राज्य और विशेषतया अन्य विदेशी राज्यों के प्रति व्यवहार के सम्बन्ध में कौटिल्य ने षाड्गुण्य अर्थात् 6 लक्षणों वाली नीति का प्रतिपादन किया। इसके 6 लक्षण हैं- सन्धि, विग्रह (युद्ध), यान (शत्रु पर वास्तविक आक्रमण करना), आसन (तटस्थता), संश्रय (बलवान का आश्रय लेना), और द्वैधीभाव (सन्धि और युद्ध का एक साथ प्रयोग)।

सन्धि- कौटिल्य के अनुसार किसी भी राजा के लिए सन्धि करने की नीति का उद्देश्य अपने शत्रु राज्य की शक्ति को नष्ट करना तथा स्वयं को बलशाली बनाना होता है।उसके अनुसार शत्रु से भी उस समय सन्धि कर ली जानी चाहिए, जबकि शत्रु पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती हो और स्वयं को सबल तथा शत्रु को निर्बल करने के लिए कुछ समय प्राप्त करना आवश्यक हो । कौटिल्य के अनुसार सन्धि कई प्रकार की हो सकती है।

विग्रह- विग्रह का अर्थ युद्ध है। इस नीति का अनुगमन राजा को तभी करना चाहिए जब राजा शत्रु को निर्बल देखे, स्वयं उसकी युद्ध व्यवस्थाएँ हों तथा वह अपनी शक्ति के बारे में पूर्णतया आश्वासत हो। विग्रह नीति का अनुसरण करने के पूर्व राजा के द्वारा राज्यमण्डल के मित्र राज्यों की सहायता प्राप्त कर लेने की भी व्यवस्था कर ली जानी चाहिए। विग्रह नीति अपनाते हुए शत्रु के ऊपर आक्रमण करके राज्य की भूमि के भागों को तुरन्त अपने अधीन कर लिया जाना चाहिए।

यान- यान का अभिप्राय वास्तविक आक्रमण है। इस नीति को तभी अपनाया जाना चाहिए जबकि राजा अपनी स्थिति को सुदृढ़ रखे और ऐसा प्रतीत हो कि आक्रमण के मार्ग को अपनाये बिना शत्रु को वश में करना सम्भव नहीं है। विग्रह और यान में मात्र स्तर का ही भेद है, यान विग्रह से कुछ आगे है।

आसन- जब विजिगीषु और शत्रु समान रूप से शक्तिशाली हों तो राजा के द्वारा आसन अर्थात् तटस्थता की नीति अपनायी जानी चाहिए। आसन की नीति अपनाते हुए राजा के द्वारा शक्ति अर्जन की निरन्तर चेष्टा की जानी चाहिए।

संश्रय- संश्रय का अर्थ बलवान का आश्रय लिये जाने से है। यदि राजा शत्रु को हानि पहुँचाने की क्षमता नहीं रखता, साथ ही यदि वह अपनी रक्षा करने में भी असमर्थ हो, तो उसे बलवान राजा का आश्रय लेना चाहिए। पर यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि जिस राजा का आश्रय लिया जा रहा है, वह शत्रु से अधिक बलशाली हो। यदि इतना बलवान राजा न मिले, तो सबल शत्रु की ही शरण ली जानी उचित है।

द्वैधीभाव- द्वैधीभाव की नीति से कौटिल्य का आशय एक राज्य के प्रति सन्धि और दूसरे राज्य के प्रति विग्रह की नीति को अपनाने से है। जब अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक राज्य से सहायता लेने और दूसरे राज्य से लड़ने की

आवश्यकता हो तो द्वैधीभाव नीति अपनायी जानी चाहिए।
वैदेशिक नीति के सफल संचालन हेतु अन्य भारतीय आचार्यों की भांति ही कौटिल्य ने भी **साम, दाम, दण्ड और भेद** इस प्रकार के चार उपायों का विधान किया है। कौटिल्य का मत है कि निर्बल राजा को समझा बुझाकर (साम द्वारा) अथवा कुछ सहायता देकर (दान द्वारा) वश में किया जाना चाहिए । भेद का अर्थ है, फूट डालना और कौटिल्य का विचार है कि सबल शत्रु राजा, जिसके विरुद्ध युद्ध में विजय नहीं प्राप्त की जा सकती हो, उसके प्रति भेद नीति को अपनाया जाना चाहिए। इसका तात्पर्य है कि सबल शत्रु राजा को उसके अन्य मित्र राज्यों में मतभेद की स्थिति उत्पन्न की जानी चाहिए या सम्बन्धित राजा और उसके राज्य की अन्य अंगों (अमात्य, मित्र आदि) के बीच मतभेद की स्थिति उत्पन्न कर दी जानी चाहिए, जिससे सबल शत्रु राजा और उसका राज्य निर्बल हो जाए। भेद उत्पन्न करने का कार्य दूत और गुप्तचरों के माध्यम से किया जा सकता है। दण्ड का अर्थ है युद्ध, और कौटिल्य का विचार है कि **दण्ड के उपाय का अनुसरण तभी किया जाना चाहिए, जबकि अन्य तीन उपाय (साम, दाम और भेद) सार्थक सिद्ध न हों।** दण्ड के उपाय को अन्त में ही अपनाने का सुझाव इसलिए दिया गया है क्योंकि इस उपाय को अपनाने में स्वयं राजा को क्षति उठानी पडती है।

निष्कर्ष -

वर्तमान में, वैश्विक राजनीति के परिप्रेक्ष्य में, कौटिल्य के सिद्धांतों की प्रासंगिकता बढ़ी है, क्योंकि राष्ट्र अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों को संरक्षित करने के लिए कूटनीतिक रणनीतियों और सैन्य शक्ति दोनों का सहारा ले रहे हैं। राज्य के लिए अपने अस्तित्व को निरंतर सुदृढ़ बनाने के लिए विदेश नीति एक आवश्यक तत्व है, जो राज्य विदेश नीति में असफल रहता है, उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। विदेश नीति की सफलता में एक राज्य की सेना या सैनिक तंत्र, गुप्तचर व्यवस्था तथा राजदूतों का विशेष महत्व होता है। विदेश नीति की सफलता में ये विभिन्न तंत्र तथा व्यक्ति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं और इनकी सफलता पर ही एक राज्य सफल विदेश नीति अपनाकर अपने राष्ट्र हित के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। सुदृढ़ सैनिक तंत्र, विस्तृत गुप्तचर व्यवस्था जिसका जाल देश और विदेश दोनों में फैला हो तथा दक्ष राजदूतों की राज्यहित संवर्धन हेतु की गई कार्यवाही एक राज्य को शक्तिशाली राज्य में परिवर्तित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।
कौटिल्य के अंतरराष्ट्रीय राजनीति का विश्लेषण समकालीन विश्व में आंशिक रूप में ही प्रभावशाली है क्योंकि **उदारीकरण और भूमंडलीकरण के वर्तमान युग में पड़ोसी राज्यों को मित्र बनाने पर जोर दिया जा रहा, जिससे साझे आर्थिक लाभ प्राप्त किये जा सके।** कौटिल्य की विचारधारा का मूल यह है कि विशेष परिस्थितियों के अनुसार जो नीति उपयुक्त हो, वही अपनायी जानी चाहिए। कौटिल्य की राज्य विषयक अन्य विचारधाराओं की भाँति वैदेशिक सम्बन्धों के विषय में ये विचार भी यथार्थ तथा वास्तविक हैं, न कि कोरे स्वप्नलोकीय । वस्तुत: कौटिल्य के अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धांत इतने तार्किक है कि सभी राज्य कम-अधिक रूप में इस पर आचरण करते रहते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

1. पांडे, अपर्णा (2017): फ्रॉम चाणक्य टू मोदी, हार्पर कॉलिन्स
2. हेवुड,एंड्रयू (2011): ग्लोबल पॉलिटिक्स, पेलग्रेव मैकमिलन पब्लिशर्स लिमिटेड, हैम्पशायर, यू0के0
3. गाबा, ओ0 पी0(2018): इंडियन पॉलिटिकल थॉट, मयूर बुक्स, नई दिल्ली
4. प्रसाद, बेनी(1968):थ्योरी ऑफ गवर्नमेंट इन एंसिएंट इंडिया, इलाहाबाद सेंट्रल बुक्स
5. अल्टेकर, ए0 एस0(1958): स्टेट एंड गवर्नमेंट इन एंशिएंट इंडिया, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
6. जौहरी, जे0 सी0(1995): पॉलिटिकल थॉट (एंशिएंट एंड मेडिवल), मेट्रोपोलिटन बुक कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

7. कोहली, रितु(1995): कौटिल्य की राजनीतिक सिद्धांत: योगक्षेम - वेलफेयर स्टेट का अवधारणा, डीप एंड डीप पब्लिकेशंस, नई दिल्ली
8. लाल, शिव (1989): "इंडियन पॉलिटिकल थॉट: हिंदू पॉलिटिक्स फ्रॉम मनु टू मधोक, इलेक्शन आर्काइव्स, नई दिल्ली
9. कौटिल्य(2009):अर्थशास्त्र (हिंदी अनुवाद: वाचस्पति गैरोला), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
10. कौटिल्य(2013): अर्थशास्त्र"(हिंदी अनुवाद: ओमप्रकाश शर्मा), मनोज पब्लिकेशंस, दिल्ली,प्रथम संस्करण
11. लॉ,नरेंद्र नाथ(1960):एस्पेक्ट्स ऑफ एंशिएंट इंडियन पोलिटी, ओरिएंट लॉन्गमैन प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता, बॉम्बे, मद्रास, नई दिल्ली, हैदराबाद, ढाका